**ओ३म्**

**“मनुष्यों की सन्तानों को श्रेष्ठ मनुष्य बनाना**

**ही वेदोत्पत्ति का प्रयोजन”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

संसार में आज जितना भी ज्ञान उपलब्ध है उसका एकमात्र उद्देश्य मनुष्य के जीवन को सुखी व श्रेष्ठ बनाना है। सद्ज्ञान ही वह पदार्थ, ज्ञान व धन है जिससे मनुष्य श्रेष्ठ बन सकता है। हमारे पास आज एक ओर मत-मतान्तरों के ग्रन्थ व पुस्तकें हैं तो दूसरी ओर ज्ञान व विज्ञान के ग्रन्थ व पुस्तकें हैं जिनका प्रयोजन भी कहीं न कहीं समम्र व किसी देश विशेष की मनुष्य जाति की शैक्षिक, भौतिक एवं शारीरिक उन्नति ही होता है। इन सबके होने पर भी मनुष्य अध्यात्म के क्षेत्र में, वह चाहे किसी भी मत, सम्प्रदाय के क्यों न हों, शून्य व उससे कुछ ऊपर ही पाये जाते हैं। इसका एक कारण तो यह समझ में आता है कि मनुष्य अल्पज्ञ होता हैं। वह विचार, चिन्तन, तप व पुरुषार्थ से कुछ सीमा तक ज्ञान को प्राप्त तो कर सकता है परन्तु वेदों के समान पूर्ण ज्ञान को कदापि प्राप्त नहीं कर सकता। विद्या प्राप्ति की एक अनिवार्य शर्त यह भी होती है कि विद्या प्राप्ती का इच्छुक व्यक्ति गुण, कर्म व स्वभाव से शुद्ध व पवित्र बुद्धि का हो। पूर्णतया पक्षपातरहित भी हो। हमें लगता है कि मत व सम्प्रदाय वालों के पास एक अच्छे विद्यार्थी की योग्यता नहीं होती। वह अपने मत, पन्थ व सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक, उसकी बताई व लिखी गई सत्य व असत्य बातों व किन्ही साम्प्रदायिक स्वार्थों व विचारों से ग्रसित व पक्षपाती होते हैं, अतः वह सत्य ज्ञान को इस कारण प्राप्त नहीं हो पाते क्योंकि यह बाते सत्य ज्ञान की प्राप्ति में बाधक होती हैं। मत व सम्प्रदाय के आधुनिक आचार्य और मत-पुस्तक की लिखी बातें उन्हें अपने मतों से बाहर जाकर स्वतन्त्र, सत्य व असत्य का चिन्तन करने की अनुमति भी नहीं देती हैं। इसका परिणाम यही होता है कि वह अपनी मत पुस्तक का तोता रटन्त व्यक्ति बन कर रह जाता है। यही बातें हम प्रायः सभी मतों के अनुयायियों व वर्तमान के आचार्यों में देख रहे हैं। ऐसा ही हमें आजकल देश में प्रचलित नाना धर्मगुरुओं में भी दिखाई देता है। वह उन्हें अपना अन्धभक्त बनाकर ही प्रसन्न हैं। वह अपने अनुयायियों को यह नहीं कहते कि उनसे पूर्व भी ऋषि, मुनि, ज्ञानी व महापुरुष हुए हैं, वह उनके जीवन चरित्र व ग्रन्थों को देखें और उनसे लाभ उठायें। सत्यारर्थप्रकाश और वेद को पढ़ने की सलाह तो वह अपने अनुयायियों को भूलकर भी नहीं देते। ऐसा लगता है कि इन ग्रन्थों से उन्हें अपनी स्वार्थ हानि होने का भय है और इसी कारण शत्रुता भी है। ऐसा करेंगे तो उनकी पोल खुल जायेगी और वह जो उन्हें धन दौलत और प्रतिष्ठा प्राप्त कराने में साधनभूत अनुयायी आदि हैं, उनसे दूर चले जायेंगे।

मत मतान्तरों से इतर मनुष्य केवल ज्ञान व विज्ञान जिसका धर्म व मत-मतान्तरों से किंचित सम्बन्ध न हो उसका ही चिन्तन कर सकता है। वहां उसे पूर्ण अथवा काफी सीमा तक छूट है। यह छूट यूरोप देशों में अधिक परन्तु अरब, मुस्लिम व भारत आदि देशों में शायद उतनी नहीं है। इसका एक कारण यूरोप से इतर देशों के लोगों की प्रवृत्ति अधिकांशतः मत-मतान्तरों की अन्धविश्वासयुक्त मान्यताओं को जानने व उनका आंखों को बन्द करके पालन करने में है। इसी कारण ज्ञान व विज्ञान के क्षेत्र में जिसमें यूरोप या पश्चिमी जगत ने सफलतायें प्राप्त की हैं, उतनी भारत व निकटवर्ती मुस्लिम मत से प्रभावित देशों ने नहीं की है। यह भी एक कारण है कि हमारे आज के उच्च कोटि के वैज्ञानिक मत-मतान्तरों में या तो विश्वास ही नहीं करते अथवा वह अपने उद्देश्य अर्थात् अपने अपने विषय के गम्भीर अध्ययन में लगे रहते हैं व उसमें सफलतायें प्राप्त करते रहते हैं जिससे संसार की समस्त मनुष्यजाति को लाभ पहुंचा है।

धर्म की बात करें तो धर्म वह है जिससे हमारी शारीरिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति होती है। यदि यह तीनों लक्ष्य धर्म से प्राप्त न हो रहे हों तो फिर उस धर्म का क्या करना? हमें लगता है कि इन तीनों लक्ष्यों वा उद्देश्यों की पूर्ति यदि किसी मत व धर्म से हो सकती है तो वह केवल वैदिक धर्म ही है। ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज के तीसरे नियम में घोषणा की है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना सुनाना ही सभी मनुष्यों का सर्वोपरि वा परम धर्म है। इसके अनुसार जो मनुष्य वेद नहीं पढ़ेगा वह धर्म तत्व को यथार्थ रूप में जान व समझ नहीं सकता है। वेदों को समझाने के लिए ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश जैसा महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखा जो हम जैसे साधरण लोगों के लिए धर्म पुस्तक वा वेदों का प्रमुख अंग प्रतीत होता है। इस पुस्तक की सहायता से हमें वेदों के विचारों, मान्यताओं व सिद्धान्तों का पूर्णतया से न सही परन्तु अधिकांश का बोध तो हुआ ही है। संसार में सत्यार्थप्रकाश व ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका ग्रन्थों की कोटि का हमें तो कोई अन्य ग्रन्थ प्रतीत नहीं होता। इन दोनों का उद्देश्य अधिक से अधिक वेद के मन्तव्यों को उसके पाठक को संप्रेषित कर उसे वेद ज्ञान की प्राप्ति में प्रवृत्त करना ही है जिसमें यह सफल सिद्ध होता है। हम जब अपने जीवन पर दृष्टि डालते हैं तो हमें लगता है कि हमारा जीवन व हमारे समान आर्यसमाज के विद्वानों व अनुयायियों का जीवन कुछ व काफी सीमा तक वेदानुकूल, वेदानुरूप व कुछ कुछ वेदमय बना है। यह दोनों ग्रन्थ ऐसे हैं जो मनुष्य से शत प्रतिशत अज्ञान, अविद्या, अन्धविश्वास, कुरीतियां व मिथ्या परम्पराओं को दूर कर देते हैं और एक ऐसे मनुष्य का निर्माण करते हैं जो आज की आवश्यकता के अनुरूप ईश्वर को व उसके यथार्थ स्वरूप को जानने वाला, ईश्वर भक्त, आत्नोन्नति कर ईश्वर का अनुभव व प्रत्यक्ष करने वाला, देश भक्त, बुराईयों से सर्वथा दूर, समाज हितकारी, मानव मात्र से प्रेम करने वाला, सबके सुख व दुःखों में सहायक, ज्ञान विज्ञान का पोषक व उत्तर चरित्र वाला बनता है। ऐसा मनुष्य खानपान की सभी बुराईयों मांसाहार, मदिरापान, ध्रूमपान, अण्डे व मछली के सेवन आदि से भी दूर होता है। उनका विरोध व आन्दोलन करता है। उसका आदर्श होता है कि अपनी आवश्यकताओं को सीमित रखकर उसके पास जो धन होता है उसे परोपकार व विद्या वृद्धि अथवा वेदप्रचार में लगाना चाहिये जिससे मानवमात्र सहित प्राणिमात्र का कल्याण हो। हम सभी बन्धुओं से सारे ग्रन्थों को छोड़कर पहले केवल सत्यार्थप्रकाश, पंचमहायज्ञविधि और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका ग्रन्थों को पढ़ने का आग्रह करते हैं। इससे आप वेद के निकट व निकटतर होंगे और ऋषि दयानन्द कृत वेदभाष्य को पढ़कर भावी जीवन में एक सच्चे और अच्छे योगी, सद्ज्ञानी, देशभक्त, सच्चे समाज सेवक, पशु-पक्षी प्रेमी व उनके हितैषी, पूर्ण शाकाहारी, उत्तम चरित्र वाले बन सकते हैं।

जो काम वेदाध्ययन से होता है वही काम सत्यार्थप्रकाश, पंचमहायज्ञविधि व ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका ग्रन्थ भी करते हैं। अतः यह भी वेदों के प्रमुख अंग व उपांग के समान ही हैं। इनका अध्ययन कर वेदों का भी अध्ययन करने से श्रेष्ठ मानव का निर्माण सम्भव है, इसमें कहीं किसी प्रकार का कोई भ्रम व सन्देह नहीं है। आईये! ऋषि दयानन्द के सभी ग्रन्थों को पढ़ने का संकल्प लेकर व पढ़ना आरम्भ कर हम वेद के निकट व वेद में प्रविष्ट होने का प्रयत्न करें। हमने अपने यह विचार बहुत तीव्रता से लिखे हैं। कारण हमें वैदिक साधन आश्रम तपोवन के उत्सव में पहुंचना है। कुछ त्रुटियां हो सकती हैं। क्षमा करें। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**-वैदिक साधन आश्रम तपोवन में आयोजित शरदुत्सव का दूसरा दिन-**

**“ईश्वर की उपासना करने वाले भक्त के सभी**

**शत्रु नष्ट हो जाते हैं: आचार्या प्रियंवदा”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 आश्रम के शरदुत्सव के दूसरे दिन प्रातः योग साधना का प्रशिक्षण व उसके बाद सन्ध्या एवं ऋग्वेद के मन्त्रों से यज्ञ का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया। दिन में आश्रम के भव्य एवं वृहद नव-निर्मित सभागार में आश्रम द्वारा संचालित तपोवन विद्या निकेतन जूनियर हाईस्कूल का वार्षिकोत्सव आयोजित हुआ जिसमें विद्यालय के बच्चों ने अनेक भव्य एवं चित्ताकर्षक एवं मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जिनसे श्रोता भाव विभोर हो गये। इसकी पुष्टि वहां गणमान्य व्यक्तियों ने अपने सम्बोधनों में भी की।

आश्रम में आयोजित यज्ञ की ब्रह्मा नजीबाबाद के आर्य कन्या गुरुकुल की संस्थापिका आचार्या प्रियंवदा जी थी और मन्त्रपाठ उन्हीं के गुरुकुल की पांच छात्राओं ने शुद्ध व स्पष्ट उच्चारण करके किया। मंच पर आर्यजगत की महान हस्ती गीतकार एवं भजन गायक पं. सत्यपाल पथिक जी उपस्थित थी। दो भजनोपदेशक पं. रूहेल सिंह एवं श्री आजाद सिंह जी भी उपस्थित थे। आश्रम के यशस्वी प्रधान श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री एवं यशस्वी मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी के साथ श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी एवं मरणोपरान्त अपने शरीर के सभी अंगों का दान करने वाले आदरणीय भाई श्री सुशील भाटिया जी भी उपस्थित थे। इस आयोजन में गुरुकुल पौंधा के 9 ब्रह्मचारी भी उपस्थित थे जो आश्रम के सेवा कार्या में अपना सहयोग कर रहे हैं।

यज्ञ में उच्चारित ऋग्वेद के सूक्तों की समाप्ति के अनन्तर यज्ञ की ब्रह्मा आचार्य प्रियंवदा जी व्याख्यान भी करती हैं जिससे श्रोता ज्ञान लाभ करते हैं। उन्होंने कहा कि वेद परम पिता परमात्मा का काव्य है। प्रभु अग्नि, इन्द्र, सोम व वरूण भी हैं। उन्होंने साधको व यज्ञ प्रेमियों को परमात्मा के इन गुणों को जानने व उन्हें धारण करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि ईश्वर अग्नि अर्थात् प्रकाशस्वरूप, ज्ञानस्वरूप एवं तेज का पुंज है। हमें उसके इन गुणों को धारण करना है। उन्होंने बताया कि आगे ले जाने के कारण अग्नि को अग्नि कहते हैं। उन्होंने कहा कि जहां अन्धकार होता वहां हमें प्रकाश की आवश्यकता होती है और हम उसे ढूंढते हैं। परमात्मा अग्नि हैं और वह हमें अन्धकार से भी बाहर निकाल कर प्रकाश देते हैं। परमात्मा हमें आगे ले जाने के कारण अग्नि कहे जाते हैं। उन्होंने कहा कि ईश्वर की उपासना करने वाले भक्त के सभी शत्रु नष्ट हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि यज्ञ का साथ परमात्मा का साथ है व उसका हाथ पकड़ना है। ईश्वर की उपासना ऐसी है जैसे कि किसी निर्धन की बेटी का किसी अमीर के पुत्र के साथ विवाह होना। उन्होंने यह भी कहा कि हमें प्रभु से जुड़ना चाहिये। प्रभु की भंक्ति हमें अपने अन्तःकरण से करनी चाहिये। हमें ईश्वर की भक्ति को छोड़कर इधर उधर भटकना नहीं चाहिये।

यज्ञ की समाप्ती के बाद पं. सत्यपाल पथिक जी ने यज्ञ प्रार्थना गाकर प्रस्तुत की जिसका आनन्द कई गुणा बढ़ गया। इसके बाद उन्होंने एक और भजन प्रस्तुत किया। भजन से पूर्व पथिक जी ने कहा कि यहां आश्रम में वेद की गंगा बह रही है। उन्होंने वेदों का एक मन्त्र बोला और कहा कि ऐसा लग रहा कि यहां बैठा हुआ प्रत्येक व्यक्ति वेद की गंगा में स्नान कर रहा है। उन्होंने गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों द्वारा शुद्ध मंत्र पाठ करने के लिए सराहना की। वेद मन्त्र का अर्थ करते हुए उन्होंने कहा कि मन्त्र में कहा गया है कि मेरे मन के पाप, तू यहां से हट जा, दूर चला जा। मैं तूझे बिलकुल पसन्द नहीं करता। मन्त्र कहता है कि पाप तू वन में जाकर अपना डेरा लगा, यहां मेरे पास तेरा कोई काम नहीं है। स्तोता कहता है कि मेरा मन गोसेवा तथा समाज सेवा आदि अच्छे कार्यों में लगा हुआ है। इस मंत्र पर आधारित पथिक जी ने अपनी एक रचना गाकर प्रस्तुत की। गीत के बोल थे **‘अरे पाप अरे हट जा मेरे मन के निकट नहीं आ। मनुआ मेरा सीधा साधा तेरा नहीं है नेक इरादा रे।।’** हमने इस गीत के आंशिक भाग की वीडियो रिकार्डिंग भी की। पथिक जी के बाद आर्य भजनोपदेशक श्री रूहेलसिंह जी ने एक भजन प्रस्तुत किया जिसके बोल थे **‘प्रीत तुमसे लगी दुनिया से प्यार क्यों करें। कोई कुछ भी कहे इसका विचार कौन करे।। छ़ोड़ दी तेरे भरोसे पे भंवर में नैया। मूढ़ माझी की विनय बार बार कौन करे।। बन गये अश्रु मोती की लड़ी। देखों तो भेंट तुमको अब फूलों के हार कौन करे।। मन है सुन्दर तो रंग रूप सभी सुन्दर हैं। बनावटी श्रृंगार कौन करे।।’** इस भजन के बाद दिल्ली की माता सरदाना जी ने अपनी एक स्वरचित कविता प्रस्तुत की।

अपने प्रवचन में यज्ञ की ब्रह्मा आचार्या प्रियंवदा जी ने तामस यज्ञ की चर्चा की। ऐसा यज्ञ जो मंत्र विहीन हो, जिसमें पुरोहितों को दक्षिणा न दी जाये और जिसमें अन्न व शुद्ध गो घृत की आहुतियां न दी जाये वह तामस यज्ञ होता है। उन्होंने कहा कि यदि ऋषि दयानन्द जी इस धरा धाम पर न आये होते तो हम वैदिक यज्ञ न रचा पाते। स्वामी दयानन्द जी की कृपा हमारे वर्तमान यज्ञों में अनुश्रुत है। ऋषि दयानन्द जी से हमें सन्ध्या भी मिली है जो कि उनकी हम पर विशेष कृपा दर्शाती है। ऋषि दयानन्द व उनसे पूर्व अथर्ववेद को लोग निकृष्ट मानते थे। वह अन्य तीन ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद को ही वेद मानते थे, अथर्ववेद को नहीं मानते थे। ऋषि ने सप्रमाण घोषणा की कि सृष्टि के आरम्भ में एक साथ चार ऋषियों को चार वेदों का ज्ञान मिला था। चारों वेदों का स्थान समान है कोई कम व कोई अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। उन्होंने कहा कि अथर्ववेद तीन वेदों के बाद आया, इस मिथ्या मान्यता का खण्डन ऋषि दयानन्द के अनेक वचनों से होता है। इससे सम्बन्धित विदुषी वक्ता ने वेदों के प्रमाण बोलकर भी सुनाये। आचार्या डा. प्रियंवदा वेदभारती जी ने जन्दावस्ता ग्रन्थ की चर्चा की और कहा कि यह लगभग पांच हजार वर्ष पुराना है। उन्होंने बताया कि इसका मूल छन्दोवेद अर्थात् अर्थववेद है। उनके अनुसार यही बिगड़ कर जन्दावस्ता बना है। इसका पहला मंत्र शं नो देवीर्भिष्टय का कुछ बिगड़ा रूप है। उन्होंने कहा कि अथर्ववेद की पैप्लाद शाखा का पहला मन्त्र शं नो देवीर्भिष्टय ही है। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज में अथर्ववेद की शौनक शाखा का प्रचलन है।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन द्वारा संचालित तपोवन विद्या निकेतन जूनियर हाईस्कूल का आज वार्षिकोत्सव भी सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्कूल के छात्र और छात्राओं ने अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम जिनमें नृत्य, नाटक व गीत आदि थे, प्रस्तुत किये। बच्चों के अभिभावक, आश्रम के साधक-साधिकायें एवं आमंत्रित अतिथि भी आयोजन में सम्मिलित थे। स्कूल के सभी बच्चे भी इस उत्सव में सम्मिलित हुए। कार्यक्रम अत्यन्त रोचक एवं प्रभावशाली था। अन्त में इस आयोजन को आचार्या प्रियंवदा जी ने सम्बोधित किया और आयोजन में प्रस्तुत अनेकानेक प्रस्तुतियों की खुल कर प्रशंसा की।

रात्रिकालीन सभा में आर्ष गुरुकुल पौंधा के ब्रह्मचारी देवव्रत का एक प्रभावशाली भजन हुआ। इससे पूर्व आर्य भजनोपदेशक श्री आजाद सिंह आजाद ने भी भजन प्रस्तुत किये। देवव्रत जी के भजन की प्रथम पंक्ति थी **‘सत्य धर्म की राहों पर क्यूं तुमने चलना छोड़ दिया।’** इसके बाद एक अन्य आर्य भजनोपदेशक श्री रूहेल सिंह जी का भजन हुआ। उनके भजन की प्रथम पंक्ति थी **‘ऋषि दयानन्द अगर न आते तो हमारी नैया पार न होती।’** श्री रूहेल सिंह जी के बाद आर्य कन्या गुरुकुल नजीबाबाद की छात्रा ब्र. निकेता ने एक भजन प्रस्तुत किया जिसके बोल थे **‘एक जंगल में नई बस्ती बसा दी तुने। पत्थर पत्थर में ज्योति लगा दी तुने।।’** इस भजन को बहुत सराहा गया। लोगों ने धन देकर भी निकेता जी का उत्साहवर्धन किया।

इसके बाद आर्यसमाज लक्ष्मण चौक के विद्वान पुरोहित श्री रणजीत शास्त्री का प्रभावशाली एवं प्रेरणादायक व्याख्यान हुआ। उन्होंने कहा कि वेद का अर्थ ज्ञान होता है। उन्होंने आगे कहा कि मर्यादा टूटती हैं तो महाभारत होता है। उदाहरण देकर उन्होंने कहा कि जब वेदाज्ञा हिंसा मत करो, चोरी मत करो, असत्य व्यवहार मत करो आदि को तोड़ा जाता है तो विवाद व युद्ध हुआ करते है। उन्होंने कहा कि महाभारत काल में राजा शान्तनु ने मर्यादा तोड़ी। उनको वानप्रस्थ जाना चाहिये था परन्तु वह नहीं गये। इससे मर्यादा टूट गयी और इसके भावी परिणाम अच्छे नहीं हुए। इस सम्बन्ध में उन्होंने अनेक उदाहरण भी दिये। विद्वान वक्ता ने कहा कि जन्म के समय सांसे मुख्य होती है। मृत्यु के समय मृतक का नाम व उसके काम शेष रह जाते हैं। उन्होंने कहा कि जन्म और मृत्यु अथवा सांस और नाम के बीच की जो अवधि है उसे ही जीवन कहते हैं। उन्होंने कहा कि सन्त और बसन्त में थोड़ा सा अन्तर है। बसन्त के आने पर प्रकृति सुधर जाया करती है और सन्त आते हैं तो संस्कृति सुधर जाती है। श्री रणजीत शास्त्री जी ने कहा कि वेद मंत्रों में निहित ज्ञान को हमें जानना है व उन पर चिन्तन करना है। श्रोताओं को वेद की शिक्षाओं को अपने जीवन में ढालने का उन्होंने आह्वान किया। वेद विरूद्ध कार्य वेदों की मर्यादाओं का उल्लघंन हैं। उन्होंने पं. रामचन्द्र देहलवी, आचार्य उदयवीर शास्त्री, पं. प्रकाशवीर शास्त्री और स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी के नाम लेकर कहा कि पहले के विद्वान काम के विद्वान थे अब अधिकतर नाम के विद्वान हैं।

कार्यक्रम के अन्त में प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक पं. सत्यपाल पथिक जी के प्रभावशाली भजन हुए। पहला था **‘ऐ आर्यजनों प्रणवीर बनो संसार को आर्य बनाना है।’** दूसरा भजन उनकी एक नई रचना है जिसे उन्होंने पुस्तक रूप में प्रकाशित भी कराया है। पुस्तक का नाम है **‘ऋषि दयानन्द गुणगान’।** यह पुस्तक हनुमान चालीस की तरज पर लिखी गई है। पथिक जी ने इसे कन्या गुरुकुल की छात्राओं एवं अन्यों के साथ मिलकर गाया। इसी के साथ रात्रि कालीन सत्संग समाप्त हुआ। अन्त में शान्ति पाठ भी किया गया। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**